

महा कुंभ, 2025 में आपका स्वागत है!

आस्था और संस्कृति का भव्य संगम महाकुंभ, दुनिया भर में लाखों तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है। दुनिया के सबसे बड़े आध्यात्मिक त्योहार के रूप में सम्मानित, यह मेला प्रयागराज में त्रिवेणी संगम-गंगा, यमुना और सरस्वती का पवित्र मिलन, के लौकिक महत्व का प्रतीक है।



कुंभ मेले के प्रकार

माघ मेला

माघ मेला बड़े समारोहों के पूर्ववर्ती रूप में मनाया जाता है। भक्त त्रिवेणी संगम पर अनुष्ठानिक डुबकी लगाने, और देवी-देवताओं की प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा होते हैं।

प्रत्येक वर्ष

अर्ध कुंभ

अर्ध कुंभ मेला प्रत्येक 6 वर्षों में आयोजित किया जाता है, और हरिद्वार तथा प्रयागराज में वैकल्पिक रूप से मनाया जाता है। 'अर्ध' शब्द का अर्थ है 'आधा', जो यह दर्शाता है कि, यह मेला दो 'पूर्ण कुंभ' मेलों के बीच में होता है।

प्रत्येक 6 वर्षों में

पूर्ण कुंभ

यह प्रत्येक 12 वर्षों में, क्रमिक रूप में हरिद्वार में गंगा नदी के तट पर, उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर, नासिक में गोदावरी नदी के तट पर, प्रयागराज में त्रिवेणी - गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों के संगम, पर होता है।

प्रत्येक 12 वर्षों में

महा कुंभ

महा कुंभ मेला सभी कुंभ समारोहों में सबसे महत्वपूर्ण, और अपूर्व है। ऐसा माना जाता है कि, महा कुंभ से जुड़ी अनूठी खगोलीय घटना प्रत्येक 144 वर्षों में केवल एक बार होती है।

प्रत्येक 144 वर्षों में



अद्भुत भारत
Incredible India



महा कुंभ

पॉकेट गाइड

प्रयागराज

2025



Ministry of Culture
Government of India

INDIAN CULTURE
DISCOVER LEARN HERITAGE CONNECT

Ministry of Tourism
Government of India

कुंभ क्या है?

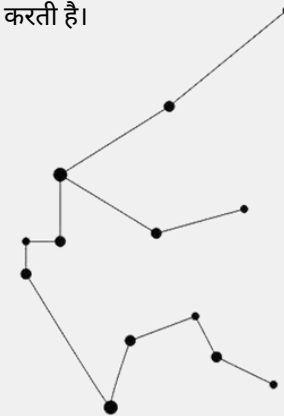
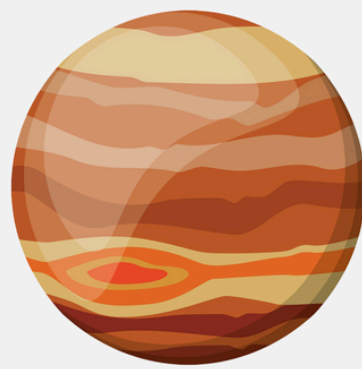
संस्कृत शब्द 'कुंभ' का अर्थ है 'घड़ा'। यह अमरत्व के अमृत का प्रतिनिधित्व करता है, जो पौराणिक समुद्र मंथन से निकला बहुमूल्य निधि था।

कथा

सुर (देवताओं), और असुरों (राक्षसों) ने अमृत के लिए क्षीर सागर का मंथन किया था। जब मंथन से कुंभ निकला, तो राक्षसों ने इसे हर लिया। बारह दिनों तक देवों तथा राक्षसों के बीच युद्ध हुआ, जिसके दौरान, अमृत की चार बूंदें पृथ्वी पर गिरीं। इस कारण प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन, और नासिक पवित्र हो गए।

खगोलीय महत्व

'कुंभ' शब्द, 'कुंभ राशि' से भी संबंधित है, जिसमें बृहस्पति ग्रह, प्रत्येक 12 वर्षों में प्रवेश करता है। यह अद्वितीय खगोलीय घटना, जिसे 'कुंभयोग' के नाम से जाना जाता है, अत्यधिक शुभ होती है। यह पवित्र स्नान के लिए आदर्श समय को चिह्नित करती है, जो भक्तों को उनके सभी पापों से मुक्ति प्रदान करती है।



पवित्र स्नान कि तिथियाँ

13.01.25

पौष पूर्णिमा

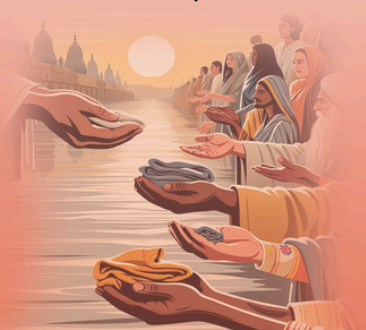
शुक्ल पक्ष के 15 वें दिन पड़ने वाली पौष पूर्णिमा, मेले के भव्य शुभारंभ तथा कल्पवास की दीक्षा का प्रतीक है।



14.01.25

मकर संक्रांति

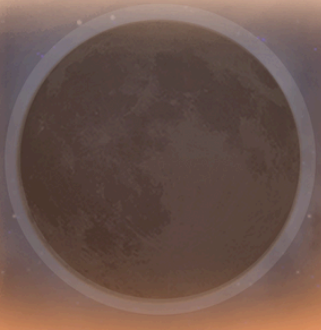
मकर संक्रांति, हिंदू कैलेंडर में 'मकर राशि' में सूर्य के खगोलीय संक्रमण को चिह्नित करती है, और महा कुंभ मेले के दौरान तीर्थ यात्रियों द्वारा धर्मार्थ दान की शुभ शुरुआत का प्रतीक है।



29.01.25

मौनी अमावस्या

मौनी अमावस्या, ऋषि ऋषभ देव के सम्मान में, पवित्र स्नान के लिए अत्यधिक शुभ मानी जाती है। इस शुभ दिन पर ऋषि ने अपनी लंबी तपस्या तोड़ी थी, और संगम के पवित्र जल में स्नान किया था।



03.02.25

बसंत पंचमी

बसंत पंचमी मौसमी संक्रमण का प्रतीक है, और देवी सरस्वती के आगमन का सम्मान है। यह शुभ दिन ज्ञान और समृद्धि का प्रतीक है, जिसे कल्पवासी पीले वस्त्र पहनकर मनाते हैं।



12.02.25

माघी पूर्णिमा

माघी पूर्णिमा गुरु बृहस्पति का सम्मान करती है, और यह मान्यता है कि, इस दिन 'गंधर्व (दिव्य प्राणी)' संगम में आते हैं। इस दिन तीर्थयात्री इस विश्वास के साथ संगम में स्नान करते हैं कि, उन्हें मृत्यु के बाद स्वर्ग की प्राप्ति होगी।



26.02.25

महा शिवरात्रि

महा शिवरात्रि की गहन प्रतीकात्मकता है, क्योंकि यह कल्पवासियों के अंतिम पवित्र स्नान का प्रतीक है। यह तात्त्विक रूप से भगवान शिव से संबंधित है।

